रूपसिद्धि

Name:- Sonikumar
Class:- B.A II year
Deptt:- Sanskrit

चौरभयम्

लौ० वि० - चोराद् भयम्
अलौ० वि० - चौर ङसि भय सु

इस विग्रह के पश्चात 'पञ्चमी भयेन से 'भय' शब्द का पञ्चम्यन्त 'चौर' शब्द के साथ समास होने पर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा होने के फलस्वरूप 'सुपो धातु-प्रातिपदिकयोः' से 'सुप (ङसि और सु) का लोप होने पर रूप बना -

चौर भय

इस स्थिति में प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् से 'चौर' की उपसर्जन संज्ञा होने पर 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्व प्रयोग हो जाने की स्थिति में 'चौर भय' रूप बना

पुनः एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर 'स्वौजसमौट' से 'सु' विभक्ति आने पर 'अतोऽम्' से अम आदेश के बाद पूर्वरूप होकर रूप बना

चौरभयम्